International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.1 September – October 2022

'डॉ. कुमार विश्वास की कविताओं में शहीद वीरों का जयगान'

प्रा. संजय जाधव

सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मुधोजी महाविद्यालय, फलटण

Corresponding Author - प्रा. संजय जाधव

Email - sanjayjadhav2873@gmail.com

DOI - 10.5281/zenodo.7314934

राष्ट्रीय भावना का अर्थ है अपने देश के लिए प्रेम और धार्मिक भावना का प्रकट होना। जैसे, सभी भारतीय अथवा भाई बहन राष्ट्रीय प्रतीकों, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गान के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता के विकास में मदत करते हैं।

२१ वीं सदी की हिंदी कविता का आरंभ २० वीं सदी की हिंदी कविता के विरासत के रूप में हुआ। २१ वी सदी की आरंभिक कविता को बीसवी सदी के अंत की हिंदी कविता का ही विस्तार समझना चाहिए। साहित्यकार की रचना में युगीन परिस्थितीयों की झाकी देखने को मिलती है और परिस्थितियों को जानने के लिए साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है।

कविता के बाहर रूप और नाम में भी युग के अनकुल परिवर्तन आए है, और साहित्यकारों ने अपने काव्य का विषय राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय चेतना सांप्रदायिक सदभाव देश की एकता के रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। डॉ. जगदीश गुप्त ने (२०१६) में कहा है- "२१ वीं सदी की कविता प्रायः समसामायिक हिंदी काव्यधारा की सर्वाधिक स्वीकृत अभिव्यक्ती है, या अभिधा है।"[१]

२१ वीं सदी के अनेक कवि है, जिन्होंनो राष्ट्रीय भावना को अपने कविता का विषय बनाया है। इनमें से आज एक नाम विश्व विख्यात बन गया है, वह है डॉ. कुमार विश्वास इनका जीवन परिचय जन्म १० फरवरी १९७० वसंत पंचमी के दिन उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद के 'पिलखुआ'में एक मध्यवर्गी परिवार में हुआ था। इन्होंने हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर परीक्षा में स्वर्णपदक प्राप्त किया। तत्पश्चात उन्होंने 'कौरबी लोकगीतों में लोकचेतना' विषय पर पीएचडी की उपाधी प्राप्त की, उनके इस शोधकार्य को २००१ में पुरस्कृत भी किया गया। उन्होंने अपना करियर राजस्थान में प्रवक्ता के रूप में १९९४ में शुरु किया। आज डॉ. कुमार विश्वास हिंदी कविता मंच के सबसे व्यस्ततम कवियों में से एक है। उन्होंने अभी तक हजारो कवि सम्मेलनों में कविता पाठ किए है। वे मंच के कवि होने के साथ-साथ हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के गीतकार भी है।

राजनीतिक प्रवेश : सन २०११ में जनलोकपाल आन्दोलन के लिए गठित टीम समाजसेवक आण्णा हजारेजी के एक सक्रीय सदस्य रहे है। २६ नवंबर २०१२ गठित आम आदमी पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य

है। राजनीति से रुठे कवि डॉ. कुमारजी कहते है- "सियासत में मेरा खोया या पाया हो नहीं सकता।"[२] सृजन का बीज हूँ। मिट्टी में जाया नहीं सकता। उनका कहना है राजनीति १० साल ५ साल लेकिन कविता हजार साल |

इसके अलावा आदित्य दत्त की फिल्म 'चाय -गरम'में अभिनय भी किया है।

इनके तीन : काव्यसंग्रह है -

१) 'इक पगली लड़की के बिन' (१९९६)

२) 'कोई दीवाना कहता है २००७, २०१० दो संस्करण |

३) 'फिर मेरी याद' २०१९

"कुमार विश्वास के गीत" सत्यम शिवम सुन्दाम की संस्कृति का आईना है। "[3]

"डॉ. कुमार विश्वास हमारे समय के ऐसे सामर्थ्यवान गीतकार है, जिन्हें भविष्य बड़े गर्व से गुनगुनाएगा।"४ 'गोपालदास नीरज'

डॉ. कुमार विश्वास की राष्ट्रप्रेम से युक्त कविता इस प्रकार है:-

"गीता का ज्ञान सुने न सुने, इस धरती का यशगान सुने

हम सबद - कीर्तन सुन न सके भारत माँ का जयगान सुने,

परवदिगार, मैं तेरे द्वार पर ले पुकार ये कहता हूँ,

चाहे अजान ना सुनें कान पर, जय-जय हिन्दुस्तान सुनें।[५]

प्रस्तुत कविता की पंक्तियो में कवि यह कहना चाहता है, चाहे हम गीता, रामायण, महाभारत का ज्ञान न मुझे चाहे अजान भी न सुने पर भारत का विजयगान यशगान सुनना, गाना हमारा दायित्व है। कवि इस कविता के माध्यम से देशवासियों के मन में राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रनिर्मिती और समाजमन में प्रबोधन करने का प्रयास कर रहे हैं।

'जन – मन में उच्छल देश प्रेम का जलाधि तरंगा है,

होठो पर गंगा हो, हाथो में तिरंगा हो।

होठों पर गंगा हो, हाथों में तिरंगा हो।"[६]

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि पुनः देशप्रेम के लिए जनता के मन में जायस राष्ट्र-प्रेम की लहर उठे ऐसा कहता है, साथ ही होठो पर पवित्र गंगा का नामजप हो और हर देश वासियों के हाथों में भारत देश की आन-बान-शान भारतीय तिरंगा लहराता हुआ दिखना चाहिए |

१४ फरवरी २०१९ के दिन नापाक आतंकवादी जैश-ए-मोहम्मद संघटना द्वारा भारतीय जवानों पर 'पुलवामा में हमला किया था। जिसमें भारत माँ के ४० वीर जवान शहीद हो गए थे, तो ३५ जवान शहीद हो गए थे, इस हादसे पर डॉ. कुमार विश्वास की वीररसयुक्त कविता इस प्रकार हैं।

"वीर शहीद की पत्नी कर रही इंसाफ की गुहार

वीरांगना रूप में ठान ली उसने, बनेगी पालनहार

आज पुलवामा बलिदान की बरसी है पहली

गुलाब के फूल अर्पित कर नमन है।

वीर जवानों को शहादत की मौजूदगी मन में गूजते हुए दहली।" [७]

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि, वीर शहीदों की वीरांगना ही आज इन्साफ की माँग करके इस धरती की पालनहार बन चुकी है।

आज पुलवामा के बलिदान की पहली बरसी है, और गुलाबों के फुल अर्पित करके इन महान शहीद वीर जवानों को नमन करते है, और इन्हीं शहीदों की बीच में ही अपने मन में राष्ट्रप्रेम की चेतना उठती हैं।

"खून का कतरा कतरा बहा दिया हंसते-हंसते वतन के वास्ते

बिना शिकन एक बूँद तक न बचाई अपने तन के वास्ते।[८]

मेरे इस महान शहीद वीरों ने अपने खून का कतरा-कतरा अपने वतन के वास्ते बहा दिया था, और अपने शरीर को जींदा रखने के लिए इन्होंने एक बूँद भी नहीं बचायी है। ऐसा देशप्रेम, राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय चेतना इन वीरों के नस-नस में भरी हुई है।

"रूह भी मेरी इस धरती पर ललकार रही

.अपने देश की बन मशाल मंशा संस्तुति कर रही।"[९]

इन शहीद वीर जवानों की आत्मा भी इस धरती पर चुनौती दे रही है और इच्छा प्रकट कर ही है कि, अपने देश की प्रदीप्त मशाल बनकर राष्ट्रप्रेम का विजयी गुनगान कर रही है।

निष्कर्ष:

रूप में हम कह सकते है कि, डॉ. कुमार विश्वास की कविताओं राष्ट्रीय भावना कूट-फूट कर भरी है, और यह आज के २१ वीं सदी के नवयुवकों को अपने देश और वीर जवानों के प्रति राष्ट्रीय चेतना ,भावना प्रेरित करने में सहाय्यक बनी है।

संदर्भ :

१) नेट/सेट/ जेआरएफ हिंदी- : प्रा. संजय जाधव विनय प्रकाशन - कानपूर ISBN ९७८/८१८९१८७/२५/५ ,२०१६ पृष्ठ ३८३

२) साभार-इंटरनेट (आभासी मंच)- कविताकोश- डॉ. कुमार विश्वास

३) साभार-इंटरनेट (आभासी मंच)- कविताकोश- डॉ. कुमार विश्वास

४) साभार- इंटरनेट (आभासी मंच) - कविताकोश- डॉ. कुमार विश्वास

५) साभार- इंटरनेट (आभासी मंच)- कविताकोश- डॉ. कुमार विश्वास

६) साभार - इंटरनेट (आभासी मंच)- कविताकोश- डॉ. कुमार विश्वास

७) साभार- इंटरनेट (आभासी मंच)- कविताकोश- डॉ. कुमार विश्वास

८) साभार -इंटरनेट (आभासी मंच) - कविताकोश- डॉ. कुमार विश्वास